नमो देव्यै महादेव्यै
नारी सशक्तीकरण

nwda.gov.in

जल संरक्षण परंपरा की अगुआ आदिवासी महिलाएं

मप्र के झाबुआ जिले में सामूहिक श्रमदान से बनाई जाती हैं जल संरचनाएं, बिना सरकारी सहयोग के 100 तालाब बनाए

यशवंत सिंह पंवार • झाबुआ

मध्य प्रदेश के आदिवासी बहुल जिले झाबुआ में पर्यावरण और जलसंरक्षण की अनूठी परंपरा की अगुआ बन चुकी है नारी शक्ति। यहां हर वर्ष जिले के सैकड़ों गांवों के हजारों लोग तय दिन जुटते हैं और सामूहिक श्रम के माध्यम से क्षेत्र में जल संरचनाएं बनाते हैं। उद्देश्य एक ही होता है-जलसंकट से जूझते क्षेत्र की तस्वीर बदल जाए और यहां भी वर्षभर परंपरागत फसलें लेने के साथ ही लोगों को पहाड़ी क्षेत्र में भी भरपूर जल मिले।

क्षेत्र को हरा-भरा रखने के लिए इस विशाल अभियान के दौरान बड़ी संख्या में पौधे भी लगाए जाते हैं। पिछले डेढ़ दशक से हो रहे इस सामूहिक श्रमदान का ही परिणाम है कि पहाड़ियों पर दो लाख से ज्यादा छोटी-छोटी जलसंरचनाएं और 100 बड़े तालाब बनाए जा चुके हैं ताकि वर्षा जल बहने के बजाय जमीन के भीतर पहुंच सके। माता वन का निर्माण करते हुए डेढ़ लाख पौधे अब तक रोपे जा चुके हैं, जिनमें से कई वृक्ष बन चुके हैं। इससे पर्यावरण में सुधार भी हुआ है।

झाबुआ में शिवगंगा अभियान के दौरान श्रमदान करती महिलाएं • फाइल फोटो नई दुनिया

जुटे 40 हजार से अधिक लोग: क्षेत्रवासी इसे शिवजी का हलमा (सामाजिक सहकार) कहते हैं। दरअसल, आदिवासी समुदाय में सामूहिक सहकार की भावना होती है। समाज का कोई भी व्यक्ति जब किसी संकट में होता है तो समाजजन मिलकर उसकी मदद करते हैं। इस वर्ष भी फरवरी के अंतिम सप्ताह में झाबुआ के विभिन्न गांवों के 40 हजार से ज्यादा लोग इस अभियान में जुटे, जिनमें 60 प्रतिशत से अधिक आदिवासी महिलाएं थीं। इस बार मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और राज्यपाल मंगूभाई पटेल भी सामूहिक श्रमदान करने पहुंचे।

मिसाल बन चुका है प्रयास: पद्मश्री महेश शर्मा ने वर्ष 2004 में जब झाबुआ क्षेत्र में वनवासियों के सहायतार्थ काम शुरू किया तो यहां सबसे बड़ी समस्या पानी की कमी के रूप में सामने आई। इस कमी को दूर करने के लिए सामूहिक श्रम के माध्यम से क्षेत्र का भूजल स्तर बेहतर करने और तालाब-पोखर आदि बनाने का लक्ष्य रखा गया।

शिवगंगा अभियान के माध्यम से वर्ष 2006 में शिवलिंग की स्थापना करते हुए गांव-गांव में शिव जटा बनाने का कार्य शुरू हुआ तो युवा काफी उत्साह से आगे आए। तब विचार बना कि पानी व पर्यावरण संरक्षण के लिए हलमा प्रथा का अनुसरण करते हुए जन अभियान चलाना चाहिए।

तीन वर्ष गांव-गांव संपर्क के बाद परमार्थ व स्वावलंबन की यह परंपरा 2009 से हर वर्ष दिखने लगी। इसे आदिवासी महिलाओं का विशेष साथ मिला। लोग न केवल जल संरचना बनाने लगे, बल्कि धरती माता की सेवा की भावना से वे गांव-गांव में भी हलमा करने लगे।

अतिरिक्त समग्री पढ़ने के लिए स्कैन करें।